बाइबल टीचर

वर्ष 22 दिसम्बर 2024 अंक 1

सम्पादकीय

पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन क्या है?

कई वर्षो पहिले दाउद राजा ने एक बात कही थी कि परमेश्वर जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चन्द्रमा और तारागण को जो तूने नियुक्त किये हैं, देखता हूं तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? क्या आपने कभी सोचा है कि आप इस पृथ्वी पर कितने समय के लिये है? शायद आप सौ साल या इससे अधिक जी लें परन्तु उसके बाद आपको जाना है। मनुष्य यदि आपने आपको इस पृथ्वी पर रहकर घमंड से भरकर ये सोचता है कि मैं ही मैं हूं, तो वह गलत सोच रहा है। अंत में प्रत्येक व्यक्ति जो जन्म लेता है उसे बाद में मिट्टी में मिल जाना है। (सभोपदेशक 12:7)। भजन सहिता 8:4 में दाऊद यही बताने का प्रयास कर रहा है कि आदमी कुछ भी नहीं है। मनुष्य इस पृथ्वी पर सांस लेता है तथा जीवन चलता रहता है, परन्तु जहां सांसे रूकी वहीं वह यहां से हमेशा के लिये चला जाता है।

पशु भी सांस लेते हैं पर वे मनुष्य से भिन्न हैं। हमारे अंदर सोचने समझने की शक्ति है, और हम यह सोच सकते हैं कि हम इस पृथ्वी पर क्यों हैं? हमें यहां रहते हुए क्या करने की आवश्यक्ता है? हमें यह समझना चाहिए कि हमें परमेश्वर ने बनाया है, और उसी की इच्छा अनुसार हम आज जीवित हैं। परन्तु इस पर यहां रहते हुए, क्या कभी आपने सोचा है कि इस पृथ्वी पर हमारे जीवित रहने का क्या उद्देश्य है? हमें अपने समय को किस प्रकार से इस्तेमाल करना चाहिए? क्या केवल मौज़-मस्ती में जीवन बिताना हमारा उद्देश्य है?

अयुब के बारे में हम जानते हैं कि उसने कभी भी परमेश्वर का विरोध नहीं किया। बाइबल बताती है कि वह धर्मी और खरा आदमी था। उसने कहा था कि ''मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है, वह थोड़े दिनों का और दुख से भरा रहता हैं। मनुष्य के विषय में यह बात बिल्कुल सच है। वह आगे कहता है कि वह फूल की नाई खिलता है और फिर तोड़ा जाता है। वह छाया की रीति पर ढ़ल जाता है और कहीं ठहरता नहीं। (अयुब

14:1-2)। मनुष्य की एक गलती यह है कि वह केवल अपने विषय में सोचता है, और यह इसलिये है क्योंकि वह स्वार्थी हो गया है।

हम लोग पशुओं के समान नहीं हैं क्योंकि पशु मर जाते और उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है, परन्तु कभी आपने सोचा है कि आप मृत्यु के पश्चात भी जीवित रहेंगे। हम इस पृथ्वी पर क्यों है और हम कहां जा रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर हमें बाइबल में मिलता है। परमेश्वर की पुस्तक हमें यह बताती है कि इस संसार से जाने के बाद हमारी आत्मा का क्या होगा। हम जानते हैं कि मनुष्य में जो आत्मा है वो कभी नहीं मरती। आत्मा अमर है।

प्रेरित पौलुस ने इस बात को बड़ी ही सफ़ाई से बताया था कि हमारी आत्मा और देह को हमें किस प्रकार से रखना है। वह कहता है कि "शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे और तुम्हारी आत्मा, और प्राण, और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे निर्दोष सुरक्षित रहे। (1 थिस्स. 5:23)। पशुओं की देह शारीरिक है परन्तु प्रत्येक मनुष्य में एक आत्मा है। शरीर जब प्राण छोड़ देता है तो आत्मा हमेशा के लिये अनंतकाल में चली जाती है जहां से कोई वापस नहीं आता। जैसे आदम को मिट्‌टी से रचा गया था और वह मिट्‌टी में मिल गया था, उसी प्रकार से मनुष्य मरने के बाद मिट्‌टी में मिल जाता है। (उत्पति 3:19)।

सवाल यह है कि हम इस पृथ्वी पर क्यों हैं? हम सब एक एक करके पृथ्वी से चले जाऐंगे। यह जीवन पृथ्वी पर बड़ा छोटा है। तो क्या हम इसलिये पृथ्वी पर हैं कि हम अपने शरीरों को प्रसन्न करें और फिर चले जायें? कदापि नहीं, अगर सिर्फ़ इसीलिये जीना है कि जीवन को बिताकर चले जायें तो इससे क्या लाभ? अब यीशु के एक चेले यूहन्ना ने यह बात कही थी कि "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आखों की अभिलाषा, और जीविका का घमण्ड् वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषायें दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा"। (1 यूहन्ना 2:15-17)। यीशु ने एक बार कहा था कि "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करें और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण (आत्मा) के बदले में क्या देगा। (मत्ती 16:26)।

इस पृथ्वी पर हमारे होने का उद्देश्य है कि हम परमेश्वर की महीमा करें और उसकी इच्छा अनुसार जीवन व्यतित करें। और उसका भय मानें तथा उसकी आज्ञा का पालन करें। (सभोपदेशक 12:13)। इस पृथ्वी पर से जाने के बाद एक दिन हमारा न्याय होगा। (इब्रानियों 9:27)। प्रत्येक मनुष्य का न्याय होगा। आपको अपने कामों का हिसाब देना होगा जो पृथ्वी पर रहकर आपने किये थे। (रोमियों 14:12)। यीशु के न्याय आसन के सामने हम सब खड़े होगें, और अपना हिसाब देगें कि पृथ्वी पर रहकर हमने कैसा जीवन बिताया। (2 कुरि. 5:10)।

न्याय के पश्चात केवल दो स्थान होगें जहां लोग रहेंगे और वो हैं स्वर्ग और नरक।

स्वर्ग वो स्थान होगा जहां वे लोग होंगे जो पृथ्वी पर रहकर परमेश्वर की इच्छा पर चले थे तथा नरक वो स्थान होगा जहां वो लोग होंगे जिन्होंने अपने जीवन से परमेश्वर को अप्रसन्न किया तथा इस पृथ्वी पर रहकर सब प्रकार के बुरे काम किये। स्वर्ग एक ऐसा स्थान होगा जहां शान्ति, खुशी, तथा विश्राम होगा। यीशु ने कहा था ''मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जा रहा हूं, ताकि जहां मैं हूं वहां तुम भी रहो। (यूहन्ना 14:1-3)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी आप स्वर्ग के विषय में पढ़ सकते हैं (प्रकाशितवाक्य 21:3-5)। और जो लोग परमेश्वर का भय नहीं मानते तथा सब प्रकार की बुराई करके भी ऐसा सोचते हैं कि हम बहुत अच्छे हैं उनका स्थान नरक में होगा। ऐसे लोगों ने यीशु और उसकी इच्छा का तिरस्कार किया और उसकी आज्ञा को नहीं माना तथा सारा जीवन केवल अपने को प्रसन्न करने में लगा दिया। उनका स्थान नरक होगा जो एक आग की झील के समान है। इसे दूसरी मृत्यु भी कहा गया है। (मत्ती 10:28, 25:41,46; 1 थिस्स. 1:7-10)।

आज आपका चुनाव क्या है? परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। वह हमें पाप की कीचड़ से निकालना चाहता है। उसने जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को जगत के पापों के लिये बलिदान कर दिया। (यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर हमारे ऊपर कोई दबाब नहीं डालता बल्कि उसने हमें चुनाव करने का अवसर दिया है, और वह हमारे लिये धीरज धरता है कि हम नाश न हों। (2 पतरस 3:9)। यीशु ने कहा था कि ''हे परिश्रम करने वाले और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओं, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। (मत्ती 11:28-29)। इसलिये पतरस कहता है, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)।

- **फ्रासिस डेविड**

आशा का सुसमाचार

सनी डेविड

हमारी भाषा में, या वास्तव में कहा जाए कि संसार की किसी भी भाषा में "निराशा" एक बड़ा ही अप्रिय शब्द है। आशा के साथ मनुष्य दुख सह सकता है, हानि तथा समस्याओं का सामना कर सकता है। परन्तु निराशा के कारण उसका हौंसला टूट जाता है। हमारे देश में और संसार में सभी जगह हर साल लाखों लोग किसी न किसी प्रकार की निराशा के कारण अपनी स्वयं हत्या कर लेते हैं। इस से हम देखते हैं कि निराशा मनुष्यों में सब जगह पाई जाती है। निराशा एक अंधकार के समान हैं, जिसमें मनुष्यों को कुछ भी नज़र नहीं आता। उस में वह अपने आप को व्यर्थ, अयोग्य और असहाय अनुभव करने लगता है। परन्तु आशा एक ज्योति के समान हैं, जिस में मनुष्य को एक अर्थ, एक मार्ग, और एक सहारा मिल जाता है। मैं सोचता हूं, कि हम में से हर एक को कभी-न-कभी ऐसा अनुभव अवश्य हुआ होगा कि हम अपनी राह में भटक गए हों। उस

समय हम अपने आप को खोया हुआ महसुस करने लगते हैं। और फिर बहुतों से पूछने के बाद भी जब हमें अपने मार्ग का पता नहीं लगता तो हम निराश हो जाते हैं। परन्तु तभी अचानक कोई उधर आ निकलता है और वह हमें न केवल हमारे स्थान का पता ही बताता है परन्तु हमें वहां तक पहुंचाने के लिये वह हमारे साथ भी हो लेता है। आप सोच सकते हैं कि ऐसी परिस्थिति में हमें कितनी खुशी और राहत और कितने आनन्द का अनुभव होगा। हमारा उदास मन प्रसन्न हो जाएगा, मुरझाया हुआ चहरा खुशी से खिल उठेगा, और हमारी निराशा आशा में बदल जाएगी।

मित्रो, इस समय में आपको इसी प्रकार के एक आशा का सुसमाचार देने के लिये आया हूं। क्योंकि बाइबल कहती है, कि "हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह 53:6)।

मित्रो, जो मनुष्य परमेश्वर से दूर और उस से अलग है, वह अंधकार में है; क्योंकि परमेश्वर ज्योति है (1 यूहनना 1:5), और जो मनुष्य अन्धकार में है, उसके पास कोई आशा नहीं हैं क्योंकि वह खोया हुआ अंधकार में भटक रहा है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य के अधर्म के कामों ने और पाप ने उसे परमेश्वर से अलग किया हुआ है। (यशायाह 59:1, 2)। परमेश्वर का वचन कहता है, कि जगत में सब मनुष्यों ने पाप किया है और सारे मनुष्य परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों 3:23)। पाप एक बोझ है, जो मनुष्य को ऊपर उठने से रोकता है। और जगत में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिसने कभी कोई पाप न किया हो, अर्थात् पाप के बोझ ने हर एक इन्सान को अपने नीचे दबा रखा है। मनुष्य अपनी मेहनत से धनी बन सकता है, एक अच्छा कलाकार बन सकता है, परन्तु वह अपने आप को पाप के बोझ से मुक्ति नहीं दिला सकता। मनुष्य एक मनुष्य को धोखा देकर उस से क्षमा मांग सकता हैं। यदि मैं आपसे अपराध करूं तो मैं आप से ही क्षमा मांग सकता हूं और केवल आप ही मुझे क्षमा कर सकते हैं।. परन्तु हम सब ने परमेश्वर से अपराध किया है, हम सब ने परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा है और उसके नियमों का उल्लंघन किया है। इसलिये हम सब परमेश्वर के सम्मुख अपराधी हैं। हम केवल उसी से क्षमा मांग सकते हैं और केवल वही हमें क्षमा दे सकता है। अपने प्रयत्नों से हम अपने आप को पाप के बोझ से छुटकारा नहीं दिला सकते, और यह सच्चाई बनी रहती है कि हम सब ने पाप किया हैं और परमेश्वर की संगति से रहित हैं। इसलिये पवित्र बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "दुखी हो, और शोक करो, और रोओ: तुम्हारी हंसी शोक में और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए।" (याकूब 4:9)। मित्रो, आज जगत में करोड़ों लोग खुशी और आनन्द में मगन हैं, बहुतेरे जगत की वस्तुओं को प्राप्त करने में लीन है, परन्तु वे जानते नहीं कि कदाचित आज ही उनकी जिन्दगी का अंतिम दिन हो, शायद, अगले हफ्ते, या अगले महिने या अगले वर्ष .... परन्तु तब क्या होगा? क्या कोई पापी परमेश्वर की संगति को प्राप्त कर सकता हैं? क्या एक अधर्मी परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है? परन्तु यदि वह परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में नहीं जाएगा, तो फिर वह कहाँ जाएगा? ऐसे मनुष्य की आत्मा का क्या

होगा? मित्रो, यह चिन्ता का विषय है। यह हमेशा की ज़िन्दगी और हमेशा की मौत का सवाल है। क्या आप वास्तव में सुन रहे हैं?

किन्तु परमेश्वर की पवित्र बाइबल न केवल हमें यह बताती है, कि, "हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया।" परन्तु फिर हमें परमेश्वर की इस पुस्तक में यह आशा का सुसमाचार भी मिलता है, कि परमेश्वर ने "हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" अर्थात् परमेश्वर ने अपने उस वचन के ऊपर, जिसे उसने मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया और जो उसका एकलौता पुत्र मसीह था, हम सभी के अपराधों के बोझ को लाद दिया। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर के अनुग्रह से उसने जगत के प्रत्येक पापी मनुष्य के लिये क्रस पर मृत्यु का स्वाद चखा। (इब्रानियों २:9) न केवल परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक में हमें यह बताता है, कि हम सब ने पाप किया है और उसकी महिमा तथा संगति से रहित और अलग हैं। परन्तु फिर वह हमें यह आशा का सुसमाचार भी देता है, कि हम, "उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।" क्योंकि "उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आना-कानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।" (रोमियों 3: 23-25)।

मित्रो पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता है, पाप मनुष्य को परमेश्वर के पास आने से रोकता है। पाप एक बोझ है जिसके कारण मनुष्य उठकर ऊपर परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। पाप प्रत्येक मनुष्य के भीतर है। यह बात बड़ी ही निराशाजनक है। परन्तु परमेश्वर के पुत्र मसीह यीशु की मृत्यु जगत के सब लोगों के लिये एक आशा का सुसमाचार हैं। क्योंकि परमेश्वर ने उसे हम सब के पापों का प्रायशिचित बनाकर क्रूस पर लटकाया। वह उसकी इच्छा से हम सब के अधर्म के कामों के कारण बलिदान हुआ। परमेश्वर ने उसके ऊपर जगत के सारे पापों का बोझ रखकर उसे बलिदान कर दिया। इसलिये बाइबल कहती है, कि मसीह हमारा मेल है। (इफिसियों 2:14)। क्योंकि पाप वह वस्तु है जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग करती है, और यीशु ने पाप के ही कारण अपना बलिदान दिया। पाप का दन्ड मृत्य है (रोमियों 6:23) और यीशु ने उसी दन्ड को जो परमेश्वर को ओर से प्रत्येक मनुष्य के लिये निर्धारित था स्वयं अपने ऊपर ले लिया। अधर्म के जिस बोझ से मनुष्य दबा हुआ था, यीशु ने उस बड़े बोझ को अपने ऊपर लेकर मनुष्य को आज़ाद कर दिया। पाप की जिस दीवार के कारण परमेश्वर का मुंह मनुष्य से ऐसा छिपा था कि वह उसकी नहीं सुनता था (यशायाह 59:2)। यीशु ने उस दीवार को क्रूस पर अपना लोहू बहाकर तोड़ दिया। पाप का जो कर्जा हमारे ऊपर था यीशु ने अपना लोहू बहाकर उसे पूरा कर दिया, अर्थात् उसने उस कर्ज को भर दिया, और इसलिये उसके कारण अब हमें अपनी आत्मा को खोने की आवश्यकता नहीं है।

मित्रो, प्रभ यीशु ने कहा है, "हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो;

क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्वाम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मत्ती 11: 28-30)। यदि आप अपने आपको परमेश्वर के पुत्र यीशु को सौंप देंगे तो वह अवश्य ही आपके बोझ को अपने ऊपर ले लेगा। परन्तु वह अपना जूआ भी अपने क्रूस का बोझ आपके ऊपर रख देगा। किन्तु वह कहता हैं, कि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है। क्या आप यीशु का जूआ अपने ऊपर लेकर और उसका बोझ उठाकर उसके पीछे चलने को तैयार हैं? वह आपके भारी बोझ को लेना चाहता है। उसकी आज्ञा हैं, कि आप उसमें विश्वास करें, और प्रत्येक पाप से अपना मन फिराएं, और बपतिस्मा लेकर अपने वर्तमान पापी जीवन को हमेशा के लिये बपतिस्मे की जल-रूपी-कब्र के भीतर दफ़ना दें। (मरकुस 16:16; लूका 13:2; रोमियों 6:1-6; प्रेरितों 8:35-39; कुलुस्सियों 2:12)।

परमेश्वर अपने वचनानुसार चलने के लिये आप को समझ दे।

पवित्र आत्मा के नाप

जे. सी. चोट

प्रेरित यूहन्ना ने मसीह के लिए कहा, "क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्योंकि वह आत्मा नापकर नहीं देता" (यूहन्ना 3:34) यूहन्ना के यह कहने का क्या अर्थ था कि मसीह को आत्मा बिना नाप के दिया गया था? "नाप-नाप" कर देने में एक सीमा का संकेत है। अन्य शब्दों में, यूं कहें कि परमेश्वर अगर मसीह को आत्मा नाप कर देता तो इसका अर्थ यह होना था कि जो कुछ उस ने किया उस सब में तो है ही, उसके पास पवित्र आत्मा भी सीमित ही होना था। पर परमेश्वर ने उसे आत्मा "नाप-नाप कर" नहीं बल्कि "बिना" नाप के दिया था। इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह पर आत्मा की सामर्थ के इस्तेमाल में न तो परमेश्वर ने और न ही आत्मा ने किसी प्रकार की कोई पाबंदी लगाई।

हमारे प्रभु को आत्मा बिना नाप के मिला था, जिस कारण वह दुष्ट आत्माओं को निकालने तथा मुर्दो को जिलाने, तूफान को थाम देने, पानी को दाखरस में बदलने, पानी पर चलने आदि सहित बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म कर पाया। इन सब के अलावा यूहन्ना ने लिखा कि "यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (यूहन्ना 20:30-31)।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

ऐसे बहुत से लोग हैं जिनका मानना है कि प्रेरित हों या आज हमारे समय के मसीही,

प्रभु के सब लोगों को या तो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का नाप मिला है या फिर मिलना चाहिए। बहुत से लोग तो वह बपतिस्मा पाने के लिए प्रार्थना करते हैं जबकि ऐसे भी हैं जो इतने हठी होते हैं कि वे परमेश्वर से उन्हें यह बपतिस्मा देने की मांग तक करते हैं! हम देखेंगे कि ऐसी उम्मीद करना उचित नहीं है।

सबसे पहले तो इस बात को याद रखें कि मसीह ने सहायक या पवित्र आत्मा भेजने का वायदा केवल प्रेरितों से किया था। उसने अपने सब चेलों के साथ या भविष्य में होने वाले सब चेलों के साथ यह वायदा नहीं किया था।

यूहन्ना की पुस्तक में हम पढ़ते हैं, "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा; और तुम भी मेरे गवाह हो **क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो**" (यूहन्ना 15:26-27)।

फिर, उसने कहा, "तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा" (यूहन्ना 16:7)।

आगे उसने कहा, "परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा" (यूहन्ना 16:13)। अब, ध्यान से देखें कि प्रभु यहां किससे बात कर रहा था? अगर आप संदर्भ को देखें, और ध्यान दें तो पाएंगे कि यीशु क्या कह रहा है। यह बिल्कुल साफ़ है कि वह यहां पर अपने प्रेरितों से यानी उनके साथ बात कर रहा है जो आरम्भ से उसके साथ रहे थे (यूहन्ना 15:27)। तो फिर सवाल यह है कि क्या प्रभु ने अपना वायदा पूरा किया?

इससे पहले कि हम यह देखें कि अंत में क्या हुआ, आइए इन बातों पर विचार करते हैं जो प्रभु ने स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाने से पहले प्रेरितों से कही थीं, "और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो" (लूका 24:49)। क्या यह बात आज के किसी भी व्यक्ति के लिए लागू हो सकती है? यकीनन नहीं!

लूका ने यह भी लिखा, "हे थियुफिलुस, मैं ने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा, उस दिन तक जब तक वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया। उसने दु:ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, 'यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे' " (प्रेरितों 1:1-5)।

फिर यीशु ने कहा, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य

पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों 1:8)। यकीनन इन बातों से हम देखते हैं कि यीशु मसीह ने अपने चेलों को पवित्र आत्मा की सामर्थ देने का वायदा किया था। अगर यह वायदा प्रेरितों के लिए था तो फिर आत्मा किन्हें मिला? क्या केवल प्रेरितों को या फिर सब विश्वासियों को?

प्रेरितों 2 में हम पढ़ते हैं, "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों 2:1-4)। इस अध्याय को पढ़ते-पढ़ते हम देखते हैं कि प्रेरित लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को वचन सुना रहे थे जिनमें से 3,000 के लगभग लोगों ने सुसमाचार की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लिया, और उद्धार पाने पर परमेश्वर ने उन्हें कलीसिया में मिला दिया (प्रेरितों 2:47)। हमें यह भी मिलता है, "और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिह्न **प्रेरितों के द्वारा** प्रगट होते थे" (प्रेरितों 2:43)

यह इस प्रतिज्ञा का पूरा होना था कि मसीह ने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देना था (मत्ती 3:11, 12)। बपतिस्मा शब्द की परिभाषा दफ़नाए जाने, डुबकी और अभिभूत करने वाले काम के रूप में की जाती है। यह "दफ़नाया जाना" पानी या किसी भी और चीज़ में हो सकता है। आत्मा में भी हो सकता है। इसलिए वचन कहता है कि पिन्तेकुस्त के दिन जब प्रेरित यरूशलेम नगर में इकट्ठा थे तो "आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और **उस से सारा घर** जहां वे बैठे थे, **गूंज** [**यानी भर**] गया" (प्रेरितों 2:2)। या यूं कहें कि प्रेरितों को पवित्र आत्मा में दफ़नाया गया और उनके आत्मा से भरे होने के सबूत के रूप में वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे थे (प्रेरितों 2:3, 4)। इन भाषाओं को समझा जा सकता था क्योंकि सुनने वाले हैरान थे कि उन्हें वे अपनी-अपनी मातृ भाषा में बोलते हुए सुन रहे थे (प्रेरितों 2:6)!

प्रेरितों के काम के अध्याय 5 में आगे पढ़ें तो (आयत 12), यही बात उन आश्चर्यकर्म करने वालों के विषय में फिर से कही गई है: "**प्रेरितों के हाथों** से बहुत चिह्न और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।" तो, निष्कर्ष यह है कि उस दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल प्रेरितों को मिला था। उस दिन किसी ने आत्मा का बपतिस्मा पाने के लिए प्रार्थना नहीं की थी और न ही किसी ने आत्मा को उतर आने की आज्ञा दी थी, जैसा कि आज के झूठे शिक्षक अक्सर किया करते हैं। **वह बहाया जाना केवल परमेश्वर की ओर से था।**

पवित्र शास्त्र में प्रेरितों (शाऊल सहित जो पौलुस के नाम से प्रसिद्ध हुआ) को छोड़, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का केवल एक और मामला मिलता है और वह कुरनेलियुस और उसके घराने का है, जो कि अन्यजाति थे। प्रेरित यहूदी थे और उन्हें पवित्र आत्मा

का बपतिस्मा पहले ही मिला हुआ था। यह साबित करने के लिए कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, अन्यजातियों के इस परिवार को भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था।

प्रेरितों के काम 10 और 11 अध्याय में हम इन लोगों के बारे में पढ़ते हैं। "कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था। वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उस के पास भीतर आकर कहता है, 'हे कुरनेलियुस!' उस ने उसे ध्यान से देखा और डरकर कहा, 'हे प्रभु, क्या है?' उस ने उस से कहा, 'तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं; और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह शमौन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहां अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है'" (प्रेरितों 10:1-6)।

यह प्रभु की इस बात को साबित करते हुए कि वह किसी का पक्ष नहीं करता, पतरस को कुछ सबक सिखाने के साथ हुआ जिसमें पतरस तथा अन्य लोग कुरनेलियुस और उसके घराने के पास आए थे। वचन आगे कहता है, "तब पतरस ने कहा, 'अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है' " (प्रेरितों 10:34, 35)।

फिर पतरस वहां इकट्ठा हुए लोगों को सुसमाचार सुनाता है, और हम पढ़ते हैं कि "पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि **अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है**। क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति-भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा, 'क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?' और उसने आज्ञा दी कि 'उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए।' तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे" (प्रेरितों 10:44-48)।

प्रेरितों 11 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि पतरस को कुरनेलियुस और उसके घराने के लोगों के द्वारा प्रभु की आज्ञा मानने पर जो कुछ कैसरिया में हुआ था, उसे बताने के लिए जब यरूशलेम की कलीसिया की ओर से बुलाया गया तो उसने बताया कि "जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उसने कहा था, **"यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम प्रवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे**। अत: जब परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?' यह सुनकर वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, **'तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के**

लिये मन फिराव का दान दिया है' " (प्रेरितों 11:15-18)।

वचन यहां पर साफ़ बताता है कि कुरनेलियुस और उसके घराने के लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था, बिल्कुल वैसे जैसे आरम्भ में यानी यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन पतरस और अन्य प्रेरितों को मिला था। ध्यान दें कि यह एक विशेष बात थी, यानी ऐसा नहीं था कि जब भी कोई विश्वासी बनता हो तभी ऐसा ही होता हो। यहां तक कि पतरस को इसका एक और उदाहरण बताने के लिए वर्षों पहले हुई उस घटना को याद करना पड़ा जब प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था।

बाकी के और मसीही लोगों को क्या मिला? क्या उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला? नहीं, उन्हें नहीं मिला। यदि हर मसीही को वह बपतिस्मा मिल जाता जिसे परमेश्वर द्वारा दिया जाता था तो प्रेरितों और कुरनेलियुस और उसके घराने के लोगों को दिए जाने में क्या फर्क होना था?

पर कोई कह सकता है, "बेशक आज कुछ मसीही होंगे जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला हुआ है।" नहीं, आज किसी पर भी आत्मा नहीं बहाया जाता। मान लीजिए अगर बहाया भी गया हो, तो इसका उद्देश्य क्या होगा?

पहली सदी में सुसमाचार नया-नया सुनाया जा रहा था और पवित्र शास्त्र के लिखे जाने की प्रक्रिया जारी थी। इस कारण प्रेरित लोग प्रचार करने के लिए जहां भी जाते, "... प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और **उन चिह्नों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा।** आमीन" (मरकुस 16:20)। आज हमें दिशा देने के लिए मुकम्मल हो चुका लिखित वचन है, और जब हम इसकी शिक्षा को मान लेते हैं तो प्रभु हमारा उद्धार वैसे ही करता है जैसे उसने वायदा किया था कि वह करेगा। आज पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने का दावा करने वाले लोग पवित्र शास्त्र को न समझ पाने और इसके दुरुपयोग के आधार पर यह दावा करते हैं। जो साफ़ साफ़ इस बात का दावा करता है कि उनके पास वह नहीं है जिसे पाने का वे दावा करते हैं क्योंकि आत्मा ने लिखित वचन में अपनी ही दी हुई बातों का विरोध नहीं करना था!

बाइबल के उद्धार की ओर वापस

चार्ल्स बाक्स

क्या आपको लगता है कि आप खोए हुए हैं? क्या आपको पिछली कोई गलती या पाप पछता रहा है या आप उससे परेशान हैं? अय्यूब की पुस्तक में मनुष्य की परिस्थितियों का वर्णन इन शब्दों में किया गया है, "मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है, वह थोड़े दिनों का और दु:ख से भरा रहता है। वह फूल के समान खिलता, फिर तोड़ा जाता है; वह छाया की रीति पर ढल जाता, और कहीं ठहरता नहीं" (अय्यूब 14:1-2)। मनुष्य के खोए होने की आत्मिक स्थिति का उत्तर केवल एक है। यीशु वह उत्तर है। यीशु ने उससे कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6)। आइए मसीह में उद्धार का अध्ययन करते हैं:

पाप क्या है? सही और गलत का मानक मनुष्य नहीं ठहराता। मनुष्य के अपनी नज़र में सही होने का परिणाम उलझन भरा ही होता है। "उन दिनों में इस्त्रएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था" (न्यायियों 17:6)। परमेश्वर ने यह प्रकट कर दिया है कि सही या गलत क्या है। बाइबल सही और गलत का प्रकाशन है। हम पाप करते हैं जब हम परमेश्वर के वचन में लिखी हुई बात को नहीं मानते हैं। "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध है" (1 यूहन्ना 3:4)।

पाप पसन्द की बात होती है। नवजात शीशुओं को पाप उनके माता पिता से नहीं मिलता है। "जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्म को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा" (यहेजकेल 18:20)। यह समझाने के लिए कि बदला हुआ व्यक्ति वास्तव में कैसा होता है यीशु ने छोटे बच्चों का इस्तेमाल किया। "मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे" (मत्ती 18:3)।

शैतान पाप को इतना लुभावना बना देता है कि हर कोई उसकी शक्ति के सामने हार मान चुका है। "इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। पाप से आनन्द मिलता है। परन्तु पाप का आनन्द केवल थोड़ी देर का होता है। "इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना अधिक उत्तम लगा" (इब्रानियों 11:25)।

पाप क्या करता है? पाप परमेश्वर के साथ संगति को तोड़ देता है। "परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता" (यशायाह 59:2)। संसार में पाप को आम तौर पर बहुत ही हलके ढंग से लिया जाता है। कलीसिया में भी ऐसा ही होता है। पाप के कारण परमेश्वर अपना मुंह हम से मोड लेता है।

इसके परिणामों को दिखाते हुए बाइबल पाप की गम्भीरता को दिखाती है। "क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23)। पाप आत्मिक मृत्यु या परमेश्वर से दूर होने का कारण बनता है। यह दूर होना इस जीवन में है, परन्तु आने वाले जीवन में यह और भी बड़ा होगा। "परन्तु डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है" (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

परमेश्वर अपनी पवित्रता में सम्पूर्ण है और इस कारण वह पाप को सहन नहीं कर सकता। "तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता; ..." (हबक्कूक 1:13)। परमेश्वर के लिए मनुष्य के द्वारा किए गए हर पाप के लिए दण्ड देना आवश्यक है और वह देगा।

पाप अनन्तकाल में प्रभु को देखना असम्भव बना देता है। "सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा" (इब्रानियों

12:14)। पाप की समस्या विश्वव्यापी होने के कारण, और मनुष्य का अपना उद्धार अपने आप न कर पाने के कारण, मनुष्य को पाप की समस्या के परमेश्वर के समाधान में दिलचस्पी लेनी चाहिए।

यीशु ने हमारे पापों के लिए दुख उठाया: यीशु ने एक सिद्ध जीवन जीया और संसार के पापों के लिए अपने आपको दे दिया। उसने मेरी जगह क्रूस पर मरकर परमेश्वर के क्रोध को शांत किया। "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु हो सकता है किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी साहस करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों 5:6-8)।

परमेश्वर ने यीशु को हमारी जगह दण्ड दिया "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए" (1 पतरस 2:24)। यीशु ने एक ही बार पापों के लिए दुख उठाया, धर्मी ने अधर्मियों के लिये ताकि वह हमें परमेश्वर के पास ले जा सके (1 पतरस 3:18)।

यदि यीशु न मरता तो परमेश्वर के पास मनुष्य को उसके पापों का दण्ड देने का कोई और विकल्प नहीं मिलता। "वरन् इसी समय उसकी धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो" (रोमियों 3:26)।

सुसमाचार इस बात की खुशखबरी है कि मसीह ने मनुष्य के स्थान पर पाप का दण्ड सहा। "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (2 कुरिन्थियों 5:21)। यीशु हमारी एकमात्र आशा है। यदि हम उसे ठुकरा देंगे तो हम नाश हो जाएंगे।

पाप से छुटकारा कैसे पाएं? परमेश्वर के साथ स्वीकार योग्य सम्बन्ध बनाने का आरम्भ विश्वास से होता है। "अत: विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों 10:17)। पाप से उद्धार पाने वाले हर किसी के लिए मसीह के सुसमाचार को सुनना आवश्यक है। उद्धार के लिए सुनना और सीखना आवश्यक है (यूहन्ना 6:44-45)।

उद्धार पाने वाले के लिए परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में विश्वास लाना आवश्यक है। "इसलिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे" (यूहन्ना 8:24)। उद्धार के संदेश को सुनकर विश्वास लाए बिना उद्धार नहीं हो सकता (मरकुस 16:15-16)।

मन फिराव मन का बदलना है जो काम के बदलने या जीवन के बदलने का कारण बनता है। मन फिराव परमेश्वर की भलाई के लिए धन्यवाद से होता है। "क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?" (रोमियों 2:4)। मन फिराव

दण्ड के डर के कारण भी होता है। “मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नष्ट होगे” (लूका 13:3)।

मुंह से यीशु में विश्वास का अंगीकार मन परिवर्तन के लिए आवश्यक कदम है कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है” (रोमियों 10:9-10)।

मसीह को पहनने के लिए मसीह में बपतिस्मा लेना आवश्यक है “और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है” (गलातियों 3:27)। बपतिस्मा से पाप धुल जाएंगे “अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल” (प्रेरितों के काम 22:16)। बपतिस्मा लेकर व्यक्ति मसीह के बाहर नहीं रहता।

उद्धार परमेश्वर की ओर से शानदार तोहफा है। इसे सम्भाल कर रखें! यीशु के साथ-साथ चलें तो तुम्हारे ओर स्वर्ग के बीच कोई और चीज़ नहीं होगी।

एक में तीन व्यक्ति होने का क्या अर्थ?

जैरी बेट्स

हमने देखा कि परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं और तीनों में खूदा की खूबियां हैं। बाइबल तीन व्यक्तियों को, केवल तीन व्यक्तियों को ईश्वरीय पदों वाले दिखाती है। हाग्गै 2:5-7 पर ध्यान दें “तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय जो वाचा मैं ने तुम से बान्धी थी, उसी वाचा के अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे बीच में बना है; इसलिये तुम मत डरो। क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अब थोड़ी ही देर बाकी है कि मैं आकाश और पृथ्वी और समुद्र और स्थल सब को कम्पित करूंगा। और मैं सारी जातियों को कम्पकपाऊंगा, और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएंगी, और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।” तीन जीवों को परमेश्वर के रूप में बताया गया है: सेनाओं का यहोवा, आत्मा, और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं। सारी जातियों की मनभावनी वस्तु स्पष्टतया यीशु को कहा गया है। इसी प्रकार से मत्ती 28:19 में इन्हीं तीनों को परमेश्वर के रूप में इकट्ठे बताया गया है, “इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।” इस वचन में “नाम” शब्द एकवचन में है। इसका अर्थ यह हुआ कि तीनों का एक ही नाम है। इसके अलावा 2 कुरिन्थियों 13:14 में पौलुस ने सभी तीनों को इकट्ठे बताया, “प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।”

परमेश्वरत्व के विचार को देखने की उम्मीद पुराने नियम में नहीं होगी। इसके

बावजूद पुराने नियम में कई वचन हैं जो निश्चित रूप से परमेश्वर की शिक्षा के साथ मेल खाते हैं। इनमें से सब स्पष्ट वचनों में से एक परमेश्वर के सम्बन्ध में बहुवचनों का इस्तेमाल है। यदि परमेश्वर एक है तो परमेश्वर के सम्बन्ध में केवल एकवचन रूपों का ही इस्तेमाल होना चाहिए। फिर भी परमेश्वर के लिए इब्रानी नाम एलोहीम बहुवचन रूप में है। आवश्यक नहीं कि यह अपने आप में बहुवचन का संकेत देता हो पर उत्पत्ति 1:2 पर ध्यान दें: "फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।' " "कहा" शब्द एकवचन में हैं पर "अपने स्वरूप" और "अपनी समानता" शब्दों की तरह "हम" बनाएं क्रिया शब्द बहुवचन में हैं। ऐसे और उदाहरण देखे जा सकते हैं। "फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है" (उत्पत्ति 3:22)। एक और उदाहरण पर ध्यान दें, इस बार यह यशायाह 6:8 से है, "तब मैं ने प्रभु का यह वचन सुना, मैं किस को भेंजूं और हमारी ओर से कौन जाएगा?..." एकवचन से बहुवचन में जाने की बात महत्वपूर्ण है।

हम परमेश्वरत्व को कैसे समझ सकते हैं?

हमने देखा है कि बाइबल परमेश्वर के एक होने की स्पष्ट घोषणा करती है। इसके बावजूद साथ ही अन्य स्थानों में बहुवचन रूप में होने की घोषणा और संकेत देती है। हम इस रहस्यमयी अवधारणा को कैसे समझ सकते हैं? परमेश्वर एक है, परन्तु वह संख्या में एक नहीं है बल्कि गुण या एकता में एक है। व्यवस्थाविवरण 6:4-5 में बाइबल में एकता के प्रसिद्ध वचन पर ध्यान दें: "हे इस्त्राएल, सुन यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।" इब्रानी भाषा में एक के लिए दो शब्द हैं। एक शब्द एक या विलक्षण होने का संकेत देता है। जैसे अब्राहम को अपने पुत्र की बली देने को कहा गया था। एक और शब्द जिसका इस्तेमाल व्यवस्थाविवरण 6 में हुआ है, कई कारकों की एकता या मेल का संकेत देता है। उत्पत्ति 2:24 में इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है, "इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेंगे।"

परमेश्वरत्व को समझाने के लिए कई रूपक सुझाए गए हैं परन्तु कोई भी सम्पूर्ण नहीं है। परमेश्वरत्व की तुलना पानी से की गई है जो ठोस, तरल या भाप के रूप में होता है। उस उदाहरण में मुख्य समस्या यह है कि पानी एक समय में तीनों रूपों में नहीं हो सकता। परमेश्वरत्व की तुलना अंडे से की गई है जिसमें खोल, जर्दी, और सफेद भाग होता है, पर यह फिर भी एक अंडा है। परमेश्वरत्व की तुलना कई भौतिक वस्तुओं से की गई है। एक उदाहरण यह है कि एक इनसान एक ही समय में पिता, और पुत्र, और पति हो सकता है। इस उदाहरण में समस्या यह है कि एक व्यक्ति एक ही व्यक्ति का पिता, पुत्र और पति नहीं हो सकता। मुझे खास तौर पर बाइबल का उदाहरण पसंद है। उत्पत्ति 1 में परमेश्वर आज्ञा देता है कि पुरुष अपने माता पिता को छोड़ अपनी पत्नी के साथ मिला रहे और वे दोनों एक तन हों। साफ है कि वे दोनों अलग-अलग व्यक्ति रहते हैं पर उन्हें पूरी तरह से एक हो जाना चाहिए। इसी प्रकार से यूहन्ना 17:11 में यीशु ने प्रार्थना की कि जिस प्रकार से वह और पिता एक हैं वैसे ही मसीही लोग भी एक हों।

साफ है कि सब मसीही लोग वास्तव में एक व्यक्ति नहीं बन सकते। इसी प्रकार पौलुस ने कहा कि "लगाने वाला और सींचने वाला दोनों एक हैं।" बेशक हमें इस बात को समझना आवश्यक है कि मनुष्यों के एक होने को सीमित करने वाली बातें परमेश्वर पर लागू नहीं होती, इस कारण परमेश्वरत्व मनुष्यों की समझ से कहीं बढ़कर एक है।

परमेश्वरत्व को देखने का एक और ढंग परमेश्वर को सोसाइटी के रूप में देखना है जिसमें अलग-अलग लोग होते हैं। वे प्रेम से एक दूसरे के साथ बंधे हुए हैं क्योंकि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16)। प्रेम उन्हें इतना कसकर बांधता है कि वे एक हो जाते हैं। प्रेम के लिए प्रेम करने वाला और जिससे प्रेम किया जाता है दोनों होने आवश्यक हैं। इस कारण संसार की सृष्टि से पहले परमेश्वर से सचमुच में तब तक प्रेम नहीं किया जा सकता था जब तक वह एक से अधिक न होता। यह नाकाफ़ी लग सकता है, परन्तु मनुष्यों में कई सीमित करने वाली बाते हैं जो खुदा में नहीं हैं। हमें शारीरिक देहों के द्वारा अलग किया गया। परमेश्वर तो आत्मा है इसलिए उस पर यह सीमा लागू नहीं होती। इसलिए सब मनुष्यों के अलग-अलग अनुभव होते हैं जो हमारे जीवनों के हर पहलू को प्रभावित करते हैं। साफ़ है कि यह सीमा परमेश्वर पर लागू नहीं होती। हर मनुष्य के पहले से अपने विचार, अपनी समस्याएं और आवश्यकताएं होती हैं, पर परमेश्वर के स्वभाव में ऐसा कुछ नहीं है। ये सब बातें, और शायद और भी हो सकती हैं, हमारे लिए पूरी तरह से अन्य मनुष्यों पर फोकस करना, उन्हें समझना या उनके साथ सहानुभूति रखना सम्भव बना देती हैं परन्तु परमेश्वर पर ये सीमाएं लागू नहीं होती जिस कारण वह उससे बढ़कर पूरी तरह से एक हो सकता है जो कि मनुष्यों के लिए संभव नहीं है।

सारांश

पाठों की इस श्रृंखला में हम परमेश्वरत्व की अवधारणा को समझाने का प्रयास कर रहे थे। बेशक हम इसे पूरी तरह से कभी भी समझ नहीं पाएंगे पर उम्मीद है कि इस अध्ययन से हमें इससे बेहतर समझना साफ़ हो जाएगा, और इससे भी बढ़कर इस महत्त्वपूर्ण शिक्षा में हमारा विश्वास मजबूत होगा। परमेश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं या विवेक के तीन केंद्र हैं पर तीनों पूरी तरह से इतना एक हैं कि वे तीनों एक हो जाते हैं। परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्ति एक दूसरे में समाए हुए हैं, दूसरों को जीवन देते हैं, और तीनों परमेश्वर के काम के हर पहलू में शामिल हैं।

आत्मा की छाप लगी (इफि. 1:13)

जे. लॉकहर्ट

हम पक्का कैसे जान सकते हैं कि हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं मिलेंगी? आयत 13 कहती है, ". .. तुम पर ... प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।" परमेश्वर हमारे अन्दर अपने पवित्र आत्मा को रखकर हमें अपनी प्रतिज्ञाओं की गारंटी देता है। 2 कुरिन्थियों 1:21, 22 और इफिसियों 4:30 में पौलुस ने भी इस अनोखी, ईश्वरीय छाप की बात की। परमेश्वर मसीह में

बपतिस्मा लेने के समय हमें अपनी देह में रखते हुए हम पर अपनी ईश्वरीय छाप भी रखता है। वह छाप पवित्र आत्मा है।

छाप लगने का क्या अर्थ है? बाइबल के समयों में छाप के चार अर्थ होते थे।

प्रमाणिकता : छाप के साथ किसी चीज़ को चिन्हित करना प्रमाणिकता का चिन्ह था। 1 राजाओं 21 में इजेबेल ने अपने पति राजा अहाब के लिए नाबोत की दाख की बारी हथियाने के लिए षड्यन्त्र रचा। अपनी योजना को प्रामाणिक दिखाने के लिए इजेबेल ने, "अहाब के नाम से चिट्ठी लिखकर उस की अंगूठी की छाप" लगाई (1 राजाओं 21:8)। यह छाप असली होने का सरकारी चिन्ह था।

हमें कैसे मालूम कि हम परमेश्वर के प्रमाणिक पुत्र और उस की प्रतिज्ञाओं के सही वारिस हैं? पौलुस ने हमें बताया कि हमारे अन्दर पवित्र आत्मा है जो प्रामाणिकता में परमेश्वर की अपनी छाप है (रोमियों 8:9)।

स्वामित्व : बाइबल के समयों में छाप का इस्तेमाल स्वामित्व के प्रमाण के लिए भी किया जाता था। यिर्मयाह की इस घोषणा के बाद कि परमेश्वर इस्त्राएल को नष्ट कर देगा, परमेश्वर ने उसे याद दिलाया कि इस्त्राएल सत्तर वर्षों में निर्वासन से लौट आएगा। यह जमीन में निवेश करने का एक सुनहरी अवसर था! नबी ने लिखा, "मैं ने उस अनातीत के खेत को अपने चचेरे भाई हनमेल से मोल ले लिया। ... और मैं ने दस्तावेज में दस्तखत और मुहर हो जाने पर, गवाहों के साम्हने वह चान्दी कांटे में तौलकर उसे दे दी" (यिर्मयाह 32:9, 10)। सत्तर साल बाद यिर्मयाह की संतान उस दस्तावेज की मोहर को तोड़कर यह साबित कर पाई कि भूमि का वह टुकड़ा उन्हीं का था। मोहर ने सौदे के पूरा होने का संकेत दिया।

पवित्र आत्मा की छाप यह संकेत देती है कि छुटकारे की कीमत पूरी चुका दी गई है और अब हम परमेश्वर के हैं। हमें दाम लेकर खरीदा गया था और फिर यह साबित करने के लिए कि हम उस के हैं मोहर लगा दी गई।

सुरक्षा : मोहर सुरक्षा के कारणों से भी लगाई जाती थी। जब दानिय्येल को शेरों की मांद में रखा गया तो दरवाजे के आस-पास मोम गिरा दी गई होगी और फिर राजा या उसके कुलीनों में से किसी की अंगूठी लेकर उस पर मोहर लगा दी होगी। छोड़ी गई आकृति आधिकारिक चिन्ह के रूप में मानी जाती थी। दरवाजा सुरक्षित था और केवल अधिकार वाले व्यक्ति को ही यह आदेश देने का अधिकार था कि मोहर तोड़ दी जाए।

ऐसी ही घटना यीशु की मृत्यु में देखी जा सकती है जब यहूदियों ने उस की कब्र पर मोहर लगा दी थी। यह उस के चेलों द्वारा चोरी से कब्र को बचाने के लिए सुरक्षा का एक प्रयास था।

यदि परमेश्वर ने किसी छुड़ाए हुए जीवन को लेकर अपनी आत्मा से उस पर छाप कर दी है, तो उस मोहर को तोड़ने का अधिकार किसे है? किसी को नहीं! हमारी मीरास सुरक्षित है।

दिया गया अधिकार : मोहर का अन्तिम इस्तेमाल दिए गए अधिकार अर्थात् किसी दूसरे के नाम में काम करने के अधिकार का संकेत देने के लिए था। इसका एक उदाहरण एस्तेर में मिलता है: "तब राजा ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से उतारकर ... हामान को, जो यहूदियों का बैरी था दे दी" (एस्तरे 3:10)।

हामान, मोर्दके और अन्य यहूदियों से पीछा छुड़ाने के लिए चाल चल रहा था। उस ने

यहूदियों को देश के लिए खतरा दिखाने के लिए राजा को एक झूठी कहानी बताई। राजा ने अपने हाथ की अंगूठी हामान को दे दी, और उसे अपने नाम में जो भी उसे ठीक लगे वह करने को कहा। बाद में जब हामान की चाल बेनकाब हो गई तो वही अधिकार मोर्दके को दे दिया गया। राजा ने मोर्दके से कहा:

> सो तुम अपनी समझ के अनुसार राजा के नाम से यहूदियों के नाम पर लिखो, और राजा की अंगूठी की छाप भी लगाओ; क्योंकि जो चिट्ठी राजा के नाम से लिखी जाए, और उस पर उस की अंगूठी की छाप लगाई जाए, उसको कोई भी पलट नहीं सकता (एस्तेर 8:8)।

मोर्दके को अपनी छाप देकर राजा ने शाही नाम में उस के लिए काम करने का पूरा अधिकार दे दिया।

विश्वासी के लिए इस सब का क्या अर्थ है? यूहन्ना 16:23 में, अपने प्रेरितों को यह बताने के बाद कि उन्हें पवित्र आत्मा मिलेगा, यीशु ने उन्हें अपने नाम में काम करने का अधिकार देने की प्रतिज्ञा की। अपने जीवनों पर ईश्वरीय छाप होने के कारण अर्थात् अपने ऊपर परमेश्वर के पवित्र आत्मा के कारण हम स्वयं यीशु के दिए गए अधिकार पर पिता से कुछ भी मांग सकते हैं।

वारिसों के रूप में हमारे मनों में पवित्र आत्मा का होना हमारी गारंटी है कि हमें वह मिलेगा जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने हम से की है। पौलुस ने कहा कि आत्मा परमेश्वर की पेशगी है, "वह उस के मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की महिमा की स्तुति हो" (इफिसियों 1:14)। परमेश्वर ने अपने चुने हुओं को पहले ही आत्मिक मीरास दे दी है; हमारे अन्दर पवित्र आत्मा परमेश्वर की पेशगी है जो यह सुनिश्चित करती है कि बाकी चुका दिया जाएगा। परमेश्वर ने हमारे अंदर अपने आत्मा को हमें केवल अपने लोगों के रूप में चिन्हित करने के लिए नहीं बल्कि हमें यह यकीन दिलाने के लिए भी किया है कि हमें वह सब मिलेगा जो उस ने हमें देने की प्रतिज्ञा की है।

सारांश : परमेश्वर का लक्ष्य अन्त में हमारा छुटकारा है। हमें पहले ही पाप के दण्ड और सामर्थ से छुड़ा लिया गया है। एक दिन हमें पाप की उपस्थिति से ही छुड़ा लिया जाएगा। अब हमारी आत्माओं को छुड़ाया गया है परन्तु एक दिन हमारी देहों को कभी न मिटने के लिए उठा लिया जाएगा। तब हमारा छुटकारा पूर्ण हो जाएगा (देखें रोमियों 8:23)। तब हमारी मीरास का लक्ष्य पूरी तरह से पूरा हो जाएगा, जब परमेश्वर हमें छुड़ाई हुई अर्थात् अविनाशी देहें देगा जिन के साथ हम अनन्तकाल तक उस की मीरास के धन का आनन्द ले सकेंगे। हमें जिस की प्रतिज्ञा की गई है वह मिलेगा।

बीते सनातनकाल से भविष्य के सनातनकाल तक, हमें मसीह में पुत्र होने के लिए चुना गया है। वर्तमान में हमें पाप से छुड़ाया गया है, यीशु के स्वभाव में बदलने के लिए स्वतन्त्र होने के लिए सनातन भविष्य में हमें परमेश्वर के धन के अनुसार एक मीरास मिली है। हमारे चुने जाने का परिणाम हमारे शानदार परमेश्वर की महिमा के लिए स्तुति है!

प्रतिज्ञा की छाप (1:13)

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा के साथ मसीही लोगों पर छाप लगाई है, परन्तु व्यावहारिक रूप में इसका क्या अर्थ है?

1. हमें मसीही लोगों के रूप में पूरी मीरास मिलती है।

2. हमें जो कुछ परमेश्वर हमें बताना चाहता है उसे समझने और जो कुछ वह हमसे करवाना चाहता है उसे करने के लिए भीतरी मनुष्य में परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सामर्थ से मजबूत किया जाता है (3:16-21)।

3. हम पवित्र आत्मा का फल लाते हैं (गलातियों 5:22, 23)।

4. हम शरीर पर विजय पाकर असली जीवन का आनन्द लेते हैं (रोमियों 8:13)।

5. हमें मुर्दों में से जी उठने का आश्वासन दिया गया है (रोमियों 8:11)।

6. हमें परेशानी के समयों में सहायता मिलती है (रोमियों 8:26, 27)।

7. हम यीशु के हाथों में सुरक्षित हैं।

यूहन्ना 10:27, 28 में यीशु ने अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं की, जब उसे ने कहा, "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।" यूनानी भाषा में "सुनती," "जानता," "पीछे-पीछे चलती," और "देता" सब वर्तमान क्रिया सांकेतिक हैं जिसका अर्थ है कि "कोई बात जो बोलने वाले के कहने के समय हो रही है।" वर्तमान क्रिया सांकेतिक "कार्य के जारी रहने की ओर ध्यान दिलाने को कहता है।" इसलिए यीशु कह रहा था, "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती रहती हैं, और मैं उन्हें जानता रहता हूं, और वे मेरे पीछे-पीछे चलती रहती हैं; और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता रहता हूं; और वे कभी नष्ट नहीं होंगी।" सुनती रहने और पीछे-पीछे चलती रहने वाली भेड़ें को कभी नष्ट न होने की प्रतिज्ञा है। यदि कोई भेड़ सुनना और पीछे चलना बंद कर दे तो वह उस प्रतिज्ञा और छाप की सुरक्षा से आगे निकल जाती है। यह सुझाव देना कि मसीह में हमें कोई सुरक्षा नहीं है उस की इस प्रतिज्ञा को अनदेखा करना है। यह सुझाव देना कि सुरक्षा की प्रतिज्ञा बिना शर्त के है, इस में इस्तेमाल क्रियाओं के कार्य को अनदेखा करना है। क्या मसीही व्यक्ति के पास सुरक्षा है? बिल्कुल पक्का! क्या उस की सुरक्षा बिना शर्त के है! बिल्कुल नहीं।

अपनी आशिषों पर ध्यान लगाना

मसीही जीवन जीते हुए आइए अपनी आशिषों को गिने और ...

- उन असंख्य ढंगों पर विचार करें, जिनसे परमेश्वर ने हमें आशिषें दी हैं।
- उन आशिषों पर ध्यान लगाएं जो केवल हमें इसलिए मिली हैं क्योंकि हम संसार में रहते हैं।
- बड़ी से बड़ी आशिषों पर विचार करें जो "मसीह में" आत्मिक आशिषें हैं। इन आशिषों से हमें आत्मिक, बहुतायत का अनन्त जीवन मिलता है।

क्या आप "मसीह में" हैं जहां ये आत्मिक आशिषें पाई जाती हैं?

मन फिराना

मन फिराने का अर्थ है, अनुचित मार्ग को छोड़कर उचित मार्ग पर चलना या पूर्ण रूप से अपने मन को बदल देना। अर्थात् हम इसे इस प्रकार से भी कह सकते कि पापों से मन फिराकर पाप न करने की प्रतिज्ञा करना और यह आवश्यक है कि जब कोई चाहता है कि उसका जीवन प्रभु के अनुसार हो तो उसे अपने पापों से मन फिराना होगा तथा

अपने जीवन को बदलना होगा।

यीशु ने बड़े ही साधारण रूप से इस बात को कहा था कि "मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नष्ट होगे" (लूका 13:3)· दूसरे शब्दों में इसे हम इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि या तो मन फिराओ या फिर नाश हो। इसका अर्थ क्या यह हुआ कि प्रभु को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई नाश हो या मन न फिराए? नहीं, परन्तु सच तो यह है कि प्रभु को इससे फर्क पड़ता है क्योंकि पतरस ने इसके विषय में युं कहा था, *"प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले"* (2 पतरस 3:9)। प्रभु की यह इच्छा नहीं है कि कोई नाश हो, परन्तु यदि कोई मन फिराने से इन्कार करता है तो वह नाश होगा। इसलिए यह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह मन फिराये या न फिराये। अथेने नामक स्थान पर बोलते हुए, पौलुस ने बड़ी सफाई से कहा था कि सब लोग मन फिराए। उसने कहा था, "इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है" (प्रेरितों 17:30)। कोई यह नहीं कह सकता कि परमेश्वर ने उसे मन फिराने के लिए नहीं कहा है। यदि आपकी आयु इतनी हो गई है कि आप भले बुरे को समझते हैं तब एक जिम्मेदार व्यक्ति होते हुए आपको मन फिराने की आवश्यकता है।

कोई इतना अच्छा भी नहीं है कि उसे मन फिराने की आवश्यकता न हो। और कोई व्यक्ति इतना बुरा भी नहीं हो सकता कि वह यह कहे कि मुझे मन फिराने की आवश्यकता नहीं है। बाइबल के अनुसार सारे लोग चाहे वे कैसा भी जीवन व्यतीत करते हों, उन सबने पाप किया है तथा सब को उद्धार की आवश्यकता है। पौलुस ने इसके विषय में कहा था, *"इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है"* (रोमियों 3:23)। और मसीही होते हुए भी यूहन्ना ने कहा था, *"यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते है: और हम में सत्य नहीं" (1 यूहन्ना 1:8)। इसलिए हमें यह पता चलता है कि एक मसीही व्यक्ति सिद्ध नहीं है। हो सकता है कि वह अपनी कमजोरी या अज्ञानता से पाप करे। ऐसी स्थिति में यूहन्ना आगे लिखता है, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है"* (1 यूहन्ना 1:9)।

इस पाठ में हम मसीही व्यक्ति के विषय में बात नहीं कर रहे बल्कि यह बात कर रहे हैं कि एक पापी को उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए, और हमने देखा कि उसे अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर में अपना पूरा विश्वास दिखाना चाहिए। हमारे पिछले पाठों में हमने देखा था कि हमें सत्य को सुनने की आवश्यकता है, उसमें विश्वास करने की आवश्यकता है तथा यीशु का अंगीकार करके उसमें बपतिस्मा लेने की जरूरत है। पतरस जब पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार कर रहा था तब उसने लोगों से कहा था, *"मन फिराओं, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे"* (प्रेरितों 2:38)। एक और स्थान

पर उसने लोगों से कहा था, *"इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाए, जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं"* (प्रेरितों 3:19)। विशेष बात यह है कि परमेश्वर ने लोगों को मन फिराने की आज्ञा दी है। उद्धार के लिए मन फिराने की आज्ञा दी गई है।

मनपरिवर्तन की सारी घटनाओं में आप को यह देखने को मिलेगा कि लोगों ने बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराया था। कई बार लोग सच्चे मन से मन नहीं फिराते तथा बपतिस्मा ले लेते हैं, और ऐसा करके वे अपने आपको तथा परमेश्वर को धोखा देते हैं। यदि कोई मन नहीं फिराता तो उसे समझना चाहिए कि परमेश्वर उसके मन को जानता है। कोई अपने पापों के लिए शायद इतना शोकित हो कि वह पापों को छोड़कर एक अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहता है (2 कुरिन्थियों 7:10)। परन्तु पापों के लिए केवल दुखी होना काफी नहीं है। अपने बुरे कार्यों को छोड़कर हमें धार्मिकता के कार्य करने चाहिए (गलातियों 5:19-24; इफिसियों 4:24-29)। केवल मन फिराने से ही उद्धार नहीं होगा। यह आवश्यक है कि हम पाप करना छोड़ें तथा एक अच्छा जीवन व्यतीत करें। परन्तु जब तक कोई उद्धार की योजना की सारी आज्ञाओं को नहीं मानता तो वह अभी भी पापी है तथा उसका उद्धार नहीं हुआ है।

ऐसा भी सम्भव है कि कोई पापों से अपना मन फिराये तथा बपतिस्मा लेकर फिर से वापस पाप में चला जाए। ऐसे व्यक्ति के साथ क्या होगा? जब तक वह मन फिराकर परमेश्वर से क्षमा नहीं मांगता वह अपने पापों में नाश होगा (2 पतरस 2:20-22)। सही कार्य को करना उचित है, तथा आप यह याद रखें कि आप अपनी आत्मा के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। पाप हमें नाश करेगा परन्तु धार्मिकता के द्वारा हमारा उद्धार होगा (रोमियों 6:23)। इस बात को याद रखियें कि मनुष्य जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा (गलातियों 6:7-8)।

जिज्ञासु मन रखें

सी. पियर्स ब्राउन

हम में से जो लोग प्रचार करने और लिखने व सिखाने का कार्य करते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वे लोगों को वही बातें बताएं जो हमारे प्रभु के द्वारा अधिकृत हैं। जो लोग सुनते और पढ़ते हैं वे इन दो बातों का ध्यान रखें कि वे क्या सुनते हैं और कैसे पढ़ते हैं (मत्ती 4:24; लूका 8:18)।

सीखने का शायद सबसे बुनियादी नियम यही है कि हमारे अंदर जिज्ञासु मन का होना आवश्यक है। मैं इस बात को मानता हूं कि एक आम बच्चे में जिज्ञासु मन होता है। वे "चूहों की चार टांगें क्यों होती हैं?" से लेकर "पानी गीला क्यों होता है?" जैसे हर सवाल का जवाब चाहते हैं। मुझे यह भी लगता है कि हमारा सामाजिक सिस्टम, परिवार की शैली, सिखाने की तकनीकें और कई अन्य बातों से जिज्ञासु मन का गला घोटा जाना या उसे पथ भ्रष्ट करना सम्भव है। इसलिए हमें न केवल अपनी बाइबल की

क्लासों में बल्कि घरों में, स्कूल में, और हर जगह इसे बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। हर क्लास या परिस्थिति में जहां इसे बढ़ावा दिया जा सकता है, वहां शिक्षक को चाहिए कि छात्रों को बाइबल में से या बाइबल के बाहर किसी भी परिस्थिति में कौन, कब, क्या, कहां, क्यों, कैसे और तो क्या हुआ के सवाल पूछें? बेशक इनमें से हर सवाल हर परिस्थिति के लिए उपयुक्त है, परन्तु शिक्षक पूछेंगे, छात्रों को पता होना चाहिए कि वे क्यों पूछ रहे हैं और छात्रों को अपने स्वयं के अध्ययन में और अन्य हर प्रकार की परिस्थिति में ऐसे सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा तो वे पाएंगे कि उनका सिखाने का ढंग खुद-ब-खुद अधिक उपयोगी हो गया है क्योंकि वे व्यक्तिगत रूप में सीखने को बढ़ावा देंगे और इनसे क्लास के प्रयास कई गुना बढ़ जाएंगे।

सावधानी की एक-दो बातें आवश्यक हैं। पहले किसी भी प्रकार के गम्भीर प्रश्न पूछे जाने को हतोत्साहित न करें। यदि छात्र इस बात पर हैरान होता है कि "परमेश्वर कहां से आया?" तो उसे कभी इस प्रकार से जवाब न दें, "कैसा बेतुका सवाल है! बेशक, परमेश्वर कहीं से नहीं आया! वह सदा से था!" यदि कोई पूछता है कि "आपको कैसे मालूम कि परमेश्वर है?" तो यह उत्तर कभी न दें, "मूर्ख भी प्रमाण के द्वारा यह बता सकता है कि परमेश्वर है," या "विश्वास करने वाला व्यक्ति ऐसे सवाल नहीं करता!" तुम्हें इसे विश्वास से मानना होगा।

प्रचारक कई बार इन सवालों का इस्तेमाल करते हुए लगभग किसी भी विषय पर कई-कई सरमन दे सकते हैं। वे बपतिस्मे, प्रभु-भोज, कलीसिया के संगीत, चंदा देने, आराधना की बातों तथा परमेश्वर के प्रति हमारी सेवा जैसे विषयों पर बहुत अच्छे सरमन दे सकते हैं। "बाइबल के अनुसार बपतिस्मा क्या है और आपको कैसे मालूम?" "बपतिस्मा किसे दिया जाना चाहिए?" "कब दिया जाना चाहिए?" "बपतिस्मा कैसे दिया जाना चाहिए और इस तरीके से क्यों दिया जाना चाहिए?" "बपतिस्मा क्यों दिया जाना आवश्यक है?" "क्या हर 'क्यों' का जवाब 'इसलिए कि' के साथ-साथ 'के कारण' है?" क्या आपको दोनों की आवश्यकता है। क्यों? सहित श्रृंखला से बढ़कर बपतिस्मे पर इससे आसान, अधिक सामर्थी और आसानी से रखे जाने वाले सबक और क्या हो सकते हैं? कोई इनमें से किसी भी विषय पर और किसी भी अन्य विषय पर बड़े आसान, सामर्थपूर्ण ढंग से, सामर्थी और आसान सबक दिए जा सकते हैं।

पर अब मैं यहां एक मुख्य बात पर ज़ोर देने की कोशिश कर रहा हूं वह यह है कि प्रचारकों और शिक्षकों को अपने छात्रों और छात्राओं को किसी भी विषय पर जिसका वे अध्ययन करते हैं, ऐसे सवाल सिखाने आवश्यक हैं। जब भी आप इस फॉरमेट के साथ कोई सरमन या लैसन देते हैं तो जो आप कर रहे हैं उन्हें बताएं और उन्हें सब बातों में ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें। यदि हम इस सम्बन्ध में कि परमेश्वर ने क्या कहा है, दूसरों के अंदर जिज्ञासा उत्पन्न करने में सहायक हो सकें बल्कि लोगों, कामों और अपने सम्बन्धों के बारे में भी तो हमारी हज़ारों समस्याएं अपने आप ही सुलझ जाएंगी।

हे प्रचारको, हे शिक्षको और हे पाठको: किसी भी क्लास या परिस्थिति में जहां आप जिज्ञासु मन को प्रोत्साहित कर सकते हों, दूसरों को ऐसा मन रखने में सहायता करो।

आप और बाइबल

बॉबी की

बहुत से लोग बाइबल के कम-से-कम किसी भाग पर विश्वास करने का दावा करते हैं। परन्तु धार्मिक लोगों में से भी बहुत से लोग यह विश्वास नहीं करते हैं कि धार्मिक तौर पर हमारी अगुआई के लिए परमेश्वर का वचन अपने आप में पर्याप्त है। कइयों का कहना होता है कि बाइबल सच नहीं है जबकि औरों का कहना होता है कि परमेश्वर की सेवा करने के लिए जो पूरी सच्चाई हमें चाहिए वह इसमें नहीं है। इन व्यवहारों के कारण लोगों ने वह देने के लिए जो उन्हें लगता है कि परमेश्वर के वचन में नहीं है, अपने धर्मसार या अकीदे लिख दिए हैं।

बेशक जब तक हम इस पर विश्वास नहीं करते, तब तक बाइबल हमारी सहायता नहीं करेगी। इब्रानियों के लेखक का कहना है, "क्योंकि हमें उन्हीं की तरह सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा" (इब्रानियों 4:2)। "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है। क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे" (1 कुरिन्थियों 1:8, 21)।

बाइबल खुद सत्य होने का दावा करती है। इसमें वह सब है जो हमें जानने की आवश्यकता है यानी वह सब जिस पर हमें विश्वास करने की आवश्यकता है, और वह सब जो हमें मसीह में सिद्ध बनने के लिए आवश्यक है (2 तीमुथियुस 3:15-17)। अपठित बाइबल (यानी बिना पढ़ी गई) किसी को लाभ नहीं पहुंचाएगी। वचन को सुनना और उसे न मानना आपके प्राण का उद्धार नहीं करेगा। ध्यान से इन बातों का अध्ययन करें:

परमेश्वर का वचन निर्मल है; परन्तु यह केवल उन्हीं को निर्मल करेगा जो इसकी आज्ञा को मानते हैं (1 पतरस 1:22)। परमश्वर का वचन सिद्ध है; परन्तु यह केवल उन्हीं को सिद्ध करता है जो इस पर अमल करते हैं (याकूब 1:22-25)। परमेश्वर का वचन उद्धार के निमित सामर्थ है; परन्तु यह केवल उन्हीं का उद्धार करता है जो इस पर विश्वास करते और इसकी आज्ञा को मानते हैं (रोमियों 1:16)। परमेश्वर का वचन सर्वदा बना रहता है; परन्तु यह केवल उन्हीं के काम का है जो सदा तक जीवित रहने के लिए परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं (1 यूहन्ना 2:17; मत्ती 7:21)। परमेश्वर का वचन जीवनदायक है; परन्तु यह जीवन केवल उन्हीं को देता है जो इसे व्यवहार में लाते हैं (यूहन्ना 3:3-8; लूका 8)। परमेश्वर का वचन सम्पूर्ण है परन्तु हमारे लिए सम्पूर्ण होने के लिए आवश्यक है कि हमारे विश्वास और व्यवहार इसकी शिक्षा से मेल खाते हों (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

प्रिय पाठक, बाइबल के प्रति आपकी जवाबदेही है। पौलुस की ताड़ना को मानो और "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो "(कुलुस्सियों 3:17)। याद रखो कि आज अगर परमेश्वर के वचन को हम हलके से लेते हैं तो उस सबसे बड़े दिन में यानी कयामत के दिन हमारा न्याय यही करेगा (यूहन्ना 12:48)।

"आपने सुना होगा"

जॉन स्टेसी

आपने सुना होगा, कि कहा जाता है कि परमेश्वर की स्तुति में, उसकी उपासना में गाते समय यदि बाज़ों को बजाया जाए तो उस से कुछ अंतर नहीं पड़ता। किन्तु क्या यह सही है, क्या बाइबल की यही शिक्षा है? प्रभु यीशु के नए नियम में हम कई जगह पर पढ़ते हैं कि यीशु के अनुयायीयों ने गीत और भजन गाकर उसकी प्रशंसा की थी, पर एक भी स्थान पर हम ऐसा नहीं पढ़ते कि उन्होंने किसी भी प्रकार के बाज़ों का कभी इस्तेमाल किया हो। बाइबल के नए नियम में जितनी भी आयतें हमें मिलती हैं जिनमें गीत गाने का वर्णन हुआ है उन सभी को यहां हम प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन से यह स्पष्ट देखा जा सकता है, कि परमेश्वर को हमारे साजों की उपासना नहीं परन्तु हमारी आत्मा और सच्चाई से की गई उपासना की इच्छा है। "फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए।" (मत्ती 26:30)। "आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुये परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उनकी सुन रहे थे" (प्रेरितों 16:25) "इसलिये मैं जाति-जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा और तेरे नाम के भजन गाऊंगा।" (रोमियों 15:9)" . . . मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा।" (1 कुरिन्थियों 14:15)। "और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्त्तन करते रहो।" (इफिसियों 5:19) "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओं और चिताओं और अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।" (कुलुस्सियों 3:16)। "सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा।" (इब्रानियों 2:12)। "यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह प्रार्थना करे: यदि आनन्दित हो तो वह स्तुति के भजन गाए।" (याकूब 5:13)। "और वे यह नया गीत गाने लगे, . . . एक नया गीत गा रहे थे . . . और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा-गाकर कहते थे. . ." (प्रकाशितवाक्य 5:9, 14:3, 15:3)। नए नियम में गाने के विषय में जो कुछ भी मिलता है उस सब का वर्णन हमें उपरोक्त पदों में मिलता है, और इन से हम यह देखते हैं कि मसीही लोग आरम्भ में गीत गाते थे और उसके साथ कुछ बजाते नहीं थे।

किन्तु, क्या इस बात का कुछ विशेष महत्व है? जब हम बाइबल में कैन, और नादाब और अबीहू की आराधना के प्रति परमेश्वर के व्यवहार को देखते हैं, तो हम यह

सीखते हैं कि परमेश्वर हम से एक ऐसी उपासना की इच्छा रखता है जिसकी आज्ञा उसने स्वयं दी है या जिसे उसने स्वयं हम पर प्रकट किया है। यूहन्ना 4:24 में प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा था, "परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।" हमें इस सम्बन्ध में कि परमेश्वर आज हम से किस प्रकार की आराधना की इच्छा रखता है, सीखने की आवश्यकता है। परमेश्वर केवल वही आराधना स्वीकार करता है जो उसकी इच्छानुसार होती है।

बाइबल जांच पड़ताल के लिए आपको निमन्त्रण देती है

चार्ल्स पुग

इतिहासकार लूका द्वारा बिरिया के लोगों की यह प्रशंसा ध्यान देने योग्य हैं: ''ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों हीं हैं कि नहीं" (प्रेरितों 17:11)। बाइबल ने हमेशा से ईमानदारी से की जाने वाली समीक्षा को बढ़ावा दिया है, और ऐसा होने पर जांच करने वालों को सराहा है। और जब सीधे मन वाले लोग मसीहियत के दावों की अच्छे तरीके से जांच कर लेते हैं तो उनके लिए मसीही विश्वास की सच्चाई स्पष्ट हो जाती है।

इतिहास में ऐसे लोगों के कई उदाहरण मिलते हैं जो या तो यीशु के दावों पर संदेह करते थे या उनके प्रति बेरुखी रखते थे, परन्तु सच्चे दिल से नये नियम की जांच पड़ताल करने वाले लोग विश्वासी बन गए। सन 1848 की एक पुस्तक जिसका नाम **द यंग मैन'स गाइड अगेंस्ट इन्फिडेलिटी** (अविश्वास के विरुद्ध जवान आदमी की मार्गदर्शक) में लेखक 18वीं सदी के अंत में डेनमार्क के प्रधानमंत्री काउंट स्टुनेस की बात बताता है जिसने नास्तिकता या अधर्म की अपनी फिलॉस्फी को बढ़ावा देने की बड़ी कोशिश की। परन्तु उसने बर्नट के मसीहियत के तर्कों की जांच को पढ़ा और अंत में उसके शक दूर हो गए जो पहले उसके मन में हुआ करते थे। उसने कहा, "मैंने कभी कल्पना नहीं की थी कि मसीहियत ऐसे पक्के सबूतों के ऊपर टिकी हुई है ... जांच पड़ताल करने पर मैंने उन्हें श्रेष्ठ पाया है, और यदि सही समय लेकर वे इसकी जांच करें तो कोई भी उन्हें सच्चाई से कायल हुए बिना उनकी जांच नहीं कर सकता। ... जैसे-जैसे मैं पढ़ता गया वैसे-वैसे मैं इस बात से कायल होता गया कि वे आरोप जो मसीहियत पर लगाए जाते हैं कितने गलत हैं।"

जांच पड़ताल करने का निमन्त्रण आज भी वैसा ही है। परमेश्वर कहता है, "अपना मुकदमा लड़ो। अपने प्रमाण दो" (यशायाह 21:18)। "यहोवा कहता है, 'आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें' " (यशायाह 1:18)।